छठा अध्याय

श्री साई महाराज का ब्रम्ह तेज

श्री साई महाराज हिंदू थे अथवा मुसलमान, यह अंत तक पहेली ही बनी रही। जिन्होंने यह सिद्ध करने का दु:साहस किया कि श्री बाबा यवन है, उन्हें वे हिंदू ब्राम्हण सदृश आचरण करते दिखाई देत थे और जिन्होंने उन्हें हिदू बताने की चेष्टा की, उन्हें वे पूर्णत: यवन दिखाई देते थे। यही उनके भक्तों के लिये आश्चर्य की वस्तु थी। जब श्री साई महाराज का प्रत्यक्षत: शिरडी में वास रहा, तब कोई भक्तों ने उनके हिंदू या मुसलमान होने के संबंध में पर्याप्त छानबीन की। पंरतु किसी को उनके जन्म-काल का या उनके धर्म का कुछ भी पता न लग सका और न ही कभी लग सकेगा; क्योंकि जगत् का उद्धार करने कि लिये ही जिस दयाधन परमेश्वर ने श्रीसाई महाराज के रूप में अवतार लिया, उसका हिंदू या मुसलमान की भेदभरी संज्ञा रखने में क्या प्रयोजन हो सकता है। अज्ञानरूपी पंखो में फँसे हुए जीवों को सहारा देकर उन्हें सन्मार्ग की ओर ले जाने के पवित्र कार्य को पूर्ण करने के लिये ही स्वयं परमपिता परमेश्वर सद्गुरू के रूप में पृथ्वी पर अवतार ग्रहण करते है। वह अपने को किसी एक धर्म के बंधन में जकड सकता है। रूप में पृथ्वी पर अवतार ग्रहण करते है। वह अपने को किसी एक धर्म के बंधन में जकड सकता है! श्री साई महाराज ने भी यही मार्ग अपनाया। राम-रहीम एक ही है। हम सब एक ही परमेश्वर की संतान है। शरीर मन की पवित्रता का रक्षण करने और आत्मोन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति को धर्म की अत्यन्त आवश्यकता है। सभी धर्मोंके तत्त्व समान रूप से ऊँचे है। इस प्रकार के ऊँचे आदर्श सामने रख कर श्री बाबा हिंदुओ को हिंदू धर्म के गूढ तत्त्वों के अनुसार तथा मुसलमानों को कुरान में लिखे हुए फरमानों के अनुसार आचरण करने के लिये उपदेश किया करते थे।

श्री साई महाराज ने अपने हिंदू भक्तो को रामनवमी जैसे पवित्र पर्व को अत्यन्त उत्साह के साथ मनाने की आज्ञा दी तो उधर मुसलमानों को भी उर्स मनाने और ताजिये निकालने के लिये पूर्ण स्वतंत्रता दी। श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी के दिन भी स्वयं श्री बाबा की उपस्थिती में भक्त लोग नृत्य, मल्ल-युद्ध और दहीकाले के प्रदर्शन का आयोजन करते थे। इसी प्रकार ईद के अवसर पर मुसलमान फकीर भी मस्जिद (द्वारकामाई) में आकर नमाज पढते थे। एक बार मोहर्रम के अवसर पर कुछ मुसलमानों ने ताजिया बर कर मस्जिद के समीप खडा किया। श्री बाबा ने कोई आपत्ति नही की और चार दिन पश्चात उसे नदी में बहाने की आज्ञा दे दी।

हिंदुओ की प्रथा के अनुसार श्री बाबा का कर्णवेधन हुआ था। मस्जिद का द्वारकामाई नाम रख कर वहाँ एक घण्टा लगवाने के लिये उन्होने कहा और स्वयं 'धूनी' तैयार कर अग्नि पूजा करना आरंभ किया। चक्की पर आटा पीसना, शंख, घण्टा, घडियाल बजाना, अग्नि प्रज्वलित करना, भजन-पूजन जप करना तथा देवी-देवताओं के समान ही अपनी शास्त्रोक्त विधियों से पूजा-अर्चना करवाना आदि अनेक बातें श्री साई महाराज के हिंदू धर्मावलंबी होने के प्रमाण में कही जा सकती है। पंरतु साथ ही साथ उनकी मुसलमानों जैशी वेशभूषा, सदैव मस्जिद में रहना तथा उर्दू भाषा में बोलने का उनका ढंग आदि कुछ बातें भक्तों के मन में स्वभावत: उनके हिंदू के सबंध मे शंका उत्पन्न करती थी। कई अवसरों पर दर्शन के लिये आये हुए कर्मठ सनातनी ब्राम्हणों ने भी मन की शंकाओ को दूर कर श्री बाबा के चरणों मे अपना मस्तक झुकाया है। कई लोगों ने श्री बाबा यह प्रश्न पूछने का साहस भी किया था कि वे हिंदू है या मुसलमान। पंरतु श्री साईने किसी को भी यह ज्ञात नही होने दिया की वे किस जाति मे उत्पन्न हुए। इसके विपरीत, ऐसे प्रत्येक अवसर पर कोई-न-कोई अलौकिक लीला का प्रदर्शन कर श्री बाबा ने प्रश्नकर्ताओं को मुग्ध-चकित कर छोड दिया।

श्री साई महाराज के समाधि काल के पश्चात् भी कुछ सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत लोगों ने इस गूढ प्रश्न को प्रामाणिक ढंग से सुलझाने का यत्न किया। पंरतु आज तक किसी को भी इस संबंध में सत्य एवं प्रमाणिक घटनाओं की जानकारी प्राप्त न हो सकी। यह बात सचमुच ही अत्यन्त विचारणीय है। सामान्यत: देखा गया है कि किसी महान् विभूति या धनी व्यक्ति का देहान्त हो जाता है तो उसके पश्चात् उसके धन या स्थान पर अधिकार प्राप्त करने के लिए कोई-न-कोई निकट संबंधी या उत्तराधिकारी खडा हो जाता है तो शिरडी जैसे संस्थान की अनगनित संपति तथा असाधारण पूँजी पर स्वत्व प्राप्त करने का मोह किसी को भी क्यों न हुआ? इसका समुचित उत्तर यही है की श्री साई महाराज अयोनिज थे। उनका जन्म किसी भी कुल या धर्म में नही हुआ था दुनिया के इतिहास में यह कोई असंभव बात नही कही जा सकती। सन्त कबीर तथा नामदेव महाराज की भाँति ही श्री साई महाराज में ब्रम्ह-स्थिती पूर्णावस्था में विकसीत हुई थी और इसलिये हिंदु-मुसलमानों के साथ वे एक-सा ही व्यवहार करते थे। इसीलिये श्री बाबा के जन्मस्थान या उनके धर्म के संबंध में वादविवाद या तर्क -वितर्क न करके, उन्हें ब्रम्ह से एकता प्राप्त किया हुआ अवतारी पुरूष मानकर उनके पवित्र चरणों में अपना मस्तक नत करना ही भक्ती के लिये श्रेयस्कर है।

इस संबंध में जो दो-तीन अन्य बातें ज्ञात हुई है, उन पर भी श्रद्धालु भक्तो को अवश्य विचार करना चाहिए। जब से श्री साई महाराज का शिरडी में आगमन हुआ, तभी से शिरडी गाँव के म्हालसापति सुनार सदैव उनके साथ रहे। श्री बाबा के भक्त तो अनेक थे, पंरतु म्हालसापति से उन्हे अधिक स्नेह था। म्हालसापति ने भी तन-मन-धन से लगभग तीस चालीस वर्षे तक श्री बाबा की एकनिष्ठ भाव से निरंतर सेवा की। एक दिन रात्रि में सोते समय एकान्त में म्हालसापति ने श्री बाबा से यह प्रश्न किया था कि, ''आप कोन है?'' इस पर श्री साई महाराज ने उत्तर दिया था, ''मै ब्राम्हण-कुल में

उत्पन्न हुआ था। मै आरम्भ में 'पाथरी' मे रहता था। उसके पश्चात मेरी माँ ने मुझे एक फकीर को सौंप दिया।''कुछवर्षो के बाद पाथरी के एक निवासी श्री बाबाके दर्शन के लिये शिरडी आये। श्री बाबा ने उनके साथ वार्तालाप करते समय पाथरी गाँव के संबंध में काफी पूछताछ की। इससे यह पूर्णत: सिद्ध होता है कि श्री बाबा पाथरी गाँव के संबंध में बहुत कुछ जानते थे और उनका बाल्यकाल संभवत: वहीं व्यतीत हुआ था।

इसी प्रकार पूना की सुप्रसिद्ध विदषी काशीबाई कानिटकर ने जो अपने अनुभव लिखे है, वह भी महत्त्वपूर्ण एवं विचरणीय है। काशीबाई 'थियोसोफिस्ट' थी और अपनी विचार-प्रणाली के अनुसार श्री साई महाराज की विस्मयजनक लीलाओं का वृतान्त सुनकर उनके मन में यह भावना उत्पन्न हुई कि श्री साई महाराज वाम मार्ग अपनाने वाले कोई तांत्रिक है। इस विषय को लेकर उनका अपने परिचित व्यक्तियों के साथ वादविवाद भी हुआ। तदनन्तर कुछ दिनों के बाद उन्हें शिरडी जाने का अवसर प्राप्त हुआ। काशीबाई को देखते ही श्री बाबा बोल उठे-''आँखे खोलकर भली-भाँति देख लो मै, ब्राम्हण हूँ सच्चा ब्राम्हण कभी भी वाममार्ग को अपना कर जादू-टोना नही करता। इस ब्राम्हण की पवित्र द्वारकामाई मे बुरे कर्म करने वाले पैर रखने का साहस भी नही कर सकते।''

श्री साई महाराज के एक भक्त नानासाहेब चाँदोरकर जी ने कुछ निजी अनुभव लिखे है, जिनसे इस तथ्य की और भी पुष्टि हो जाती है कि श्री साई महाराज जन्म से हिंदू थे; पंरतु उनके गुरू कोई मुसलमान फकीर थे। श्री साई महाराज ने किसी भी धर्म की अवहेलना नही की और न ही किसी एक विशिष्ट धर्म में अपने अंध-विश्वास का ही प्रदर्शन किया। यह सच है कि श्री बाबा के भक्तों में हिंदुओ की संख्या अधिक रहती थी। पंरतु इस कारण को लेकर ही उन्होंने अन्य धर्मावलंबियो के साथ कभी भी भेदभावपूर्ण व्यवहार नही किया। आज भी सम्पूर्ण भारत वर्ष में हिंदू, मुसलमान, पारसी, ईसाई

आदि भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग उनके भक्त हैं। सत्य तो केवल यही है की श्री साई एक बहुत ही उच्च कोटि के सत्पुरूष थे। श्री साई महाराज जन्म से हिंदू थे या मुसलमान, यह प्रश्न बहुत पुराना तथा विवादग्रस्त हे, इसीलीये इसके संबंध में अधिक विस्तार के साथ लिखने का साधारण प्रयास किया गया है। बुद्धिमान पाठक अपने ही मन में विचार करे तो श्री साई महाराज स्वयं ही उन्हे साक्षात्कार देगें।